

ਕਿਸਾਨ ਅਪਨੇ ਖੇਤ ਕੀ ਸੱਧਲ ਹੈਲਥ ਜਾਨਨੇ ਕੇ ਬਾਦ ਹੀ ਕ੃ਧਿ ਕੀ ਨਈ ਤਕਨੀਕ ਅਪਨਾਏ : ਡਾਂ ਜਗਦੀਸ਼ ਰਾਣੇ

ਬੀਕਾਨੇਰ, 28 ਜਨਵਰੀ (ਪ੍ਰੇਮ) : ਕਿਸਾਨ ਅਪਨੇ ਖੇਤ ਕੀ ਸੱਧਲ ਹੈਲਥ ਜਾਨਨੇ ਕੇ ਬਾਦ ਹੀ ਕ੃ਧਿ ਕੀ ਨਈ ਤਕਨੀਕ ਅਪਨਾਏ ਤਥੀ ਹਮ ਅਚੜੀ ਖੇਤੀ ਕਰ ਪਾਏਂਗੇ, ਯੇ ਕਹਨਾ ਹੈ ਕੇਨ੍ਦ੍ਰੀਧ ਸ਼ੁ਷ਕ ਵਾਗਵਾਨੀ ਸੰਥਾਨ ਬੀਕਾਨੇਰ ਕੇ ਨਿਦੇਸ਼ਕ ਡਾਂ. ਜਗਦੀਸ਼ ਰਾਣੇ ਕਾ ਜੋ ਸ਼ਵਾਮੀ ਕੇ ਸ਼ਵਾਨਾਂਦ ਰਾਜ ਸਥਾਨ ਕ੃ਧਿ ਵਿਖਵਿਦਿਆਲਾਵ ਮੌਂ 'ਸੁਨਿਯੋਜਿਤ ਕ੃ਧਿ ਤਕਨੀਕ' ਵਿਧ ਪਰ ਆਯੋਜਿਤ 7 ਦਿਵਸੀਧ ਕ੃ਧਕ ਪ੍ਰਸ਼ਿਕਾਣ ਕਾਰ੍ਯਕ੍ਰਮ ਕੇ ਸਮਾਪਨ ਸਮਾਰੋਹ ਮੌਂ ਮੁਲਾਂ ਅਤਿਥਿ ਦੇ ਰੂਪ ਮੌਂ ਕਿਸਾਨਾਂ ਕੀ ਸੰਵੋਧਿਤ ਕਰ ਰਹੇ ਥੇ। ਸਮਾਪਨ ਕਾਰ੍ਯਕ੍ਰਮ ਕੀ ਅਧਿਕਤਾ ਕੁਲਸਚਿਵ ਡਾਂ. ਦੇਵਾ ਰਾਮ ਸੰਨੀ ਨੇ ਕੀ।

ਕਾਰ੍ਯਕ੍ਰਮ ਮੌਂ ਅਤਿਥਿਆਂ ਨੇ ਹਾਇਡੋਪੋਨਿਕ ਤਕਨੀਕ ਕੇ ਵੰਡਿਕਲਟਾਵਰ



ਕਿਸਾਨਾਂ ਕੀ ਸਮਾਨਿਤ ਕਰਾਏ ਹਨ।

(ਪ੍ਰੇਮ)

ਕਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕਿਯਾ, ਸਾਥ ਹੀ ਪ੍ਰਸ਼ਿਕਾਣ ਪੂਰਾ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਕੀ ਅਤਿਥਿਆਂ ਨੇ ਸਾਰਿਫਿਕੇਟ ਦੇਕਰ ਸਮਾਨਿਤ ਕਿਯਾ।

ਮਾਨਵ ਸੰਸਾਧਨ ਵਿਕਾਸ ਨਿਦੇਸ਼ਾਲਾਵ ਕੌਨ੍ਫੇਂਸ ਹੌਲ ਮੌਂ ਆਯੋਜਿਤ ਸਮਾਪਨ ਸਮਾਰੋਹ ਕੀ ਸੰਵੋਧਿਤ ਕਰਾਏ ਹਨ ਡਾਂ. ਰਾਣੇ ਨੇ ਕਹਾ ਕਿ ਧਾਨੀ ਹੋ ਯਾ ਤੁਰਕ, ਫਸਲ ਕੀ ਉਤਨਾ ਹੀ ਦੇਨਾ ਚਾਹਿਏ, ਜਿਤਨੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੋ।

ਕੁਲਸਚਿਵ ਡਾਂ. ਦੇਵਾ ਰਾਮ ਸੰਨੀ ਨੇ ਕਹਾ ਕਿ ਆਜ ਹਮਾਰੀ ਆਵਖਕਤਾ ਬਡੀ ਮਾਤ੍ਰਾ ਮੌਂ ਫਸਲ ਉਤਪਾਦਨ ਕੀ ਬਜਾਅ ਗੁਣਵਤਾਪੂਰਨ ਫਸਲ ਉਤਪਾਦਨ ਕੀ ਹੈ, ਸਾਥ ਹੀ ਕਹਾ ਕਿ ਖੇਤੀ ਕੀ ਪੰਚਾਗ ਤਕਨੀਕ ਕੀ ਬਜਾਅ ਅਗਰ ਹਮ ਕ੃ਧਿ ਕੀ ਨਈ ਤਕਨੀਕ ਕੀ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰੋਗੇ ਤਥੀ ਹਮ ਸਮ੍ਭਾਵ ਹੋਣਗੇ।

ਅਨੁਸਂਧਾਨ ਨਿਦੇਸ਼ਕ ਡਾਂ. ਵਿਜਯ

ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਨੇ ਕਹਾ ਕਿ ਹਮੇਂ ਕ੃ਧਿ ਕੀ ਲੇਕਰ ਪ੍ਰਧਾਨਮੰਤ੍ਰੀ ਕੀ ਧ੍ਯੇਯ ਵਾਕਿ 'ਮੋਰ ਕ੍ਰੋਂਪ, ਪਰ ਡ੍ਰੋਂਪ' ਕੀ ਧਿਆਨ ਮੌਂ ਰਖਾਵੇ ਹੁਏ ਪੰਚਾਗ ਖੇਤੀ ਕੀ ਛੋਡਕਰ ਕ੃ਧਿ ਕੀ ਨਈ ਤਕਨੀਕ ਕੀ ਅਪਨਾਨਾ ਹੈ, ਤਾਕਿ ਕਮ ਲਾਗਤ ਮੌਂ ਅਧਿਕ ਇਨਕਮ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕੇ, ਸਾਥ ਹੀ ਕਹਾ ਕਿ ਕ੃ਧਿ ਵਿਖਵਿਦਿਆਲਾਵ ਜਲਦ ਹੀ ਡ੍ਰੋਨ ਆਧਾਰਿਤ ਕ੃ਧਿ ਕੀ ਲੇਕਰ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਆਯੋਜਿਤ ਕਰਾਏ ਜਾ ਰਹਾ ਹੈ, ਜਿਸਮੌਂ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਲੇਨੇ ਵਾਲੇ ਕਿਸਾਨ ਡ੍ਰੋਨ ਕੇ ਮਾਸਟਰ ਟ੍ਰੈਨਰ ਬਨ ਸਕੇਂਗੇ।

ਕੀ ਸੀ ਸੇ ਜੁਡੇ ਏਨ.ਸੀ.ਪੀ.ਏ.ਏ.ਚ. ਨਈ ਦਿਲਲੀ ਕੀ ਸੰਯੁਕਤ ਨਿਦੇਸ਼ਕ ਕੇ.ਕੇ. ਕੌਂਸਲ ਨੇ ਕਹਾ ਕਿ ਸਾਤ ਦਿਵਸੀਧ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਮੌਂ ਜੋ ਭੀ ਸੀਖਾ ਹੈ ਤਥੀ ਛੋਟੇ ਸ਼ਤਰ ਸੇ ਹੀ ਸਹੀ, ਲੇਕਿਨ ਫੀਲਡ ਮੌਂ ਜਾਕਰ

ਤਥੀ ਇੰਡੀਮੈਂਟ ਕਰੋ।

ਪ੍ਰਸ਼ਿਕਾਣ ਕਾਰ੍ਯਕ੍ਰਮ ਮੌਂ 30 ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੇ ਹਿਸਾ ਲਿਆ। ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੇ ਅਪਨੇ ਅਨੁਭਵ ਸਾਜ਼ਾ ਕਰਾਏ ਹਨ ਕਿ ਪ੍ਰਸ਼ਿਕਾਣ ਕਾਰ੍ਯਕ੍ਰਮ ਮੌਂ ਹਾਇਡੋਪੋਨਿਕ ਜੈਸੀ ਖੇਤੀ ਕੀ ਨਈ ਤਕਨੀਕ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੌਂ ਭੀ ਬਤਾਵ ਗਿਆ, ਸਾਥ ਹੀ ਸੁਜਾਵ ਦਿਯਾ ਕਿ ਅਗਰ ਖੇਤੀ ਕੀ ਸਾਥ ਸਾਥ ਨਸਰੀ ਲਗਾਨੇ ਕੀ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਭੀ ਮਿਲੇ ਤਥੀ ਕਿਸਾਨਾਂ ਕੀ ਇਸਕਾ ਲਾਭ ਮਿਲੇਗਾ।

ਕਾਰ੍ਯਕ੍ਰਮ ਮੌਂ ਕ੃ਧਿ ਮਹਾਵਿਦਿਆਲਾਵ ਕੀ ਅਧਿ਷ਟਾਤਾ ਡਾਂ.ਪੀ.ਕੇ. ਯਾਦਵ, ਕ੃ਧਿ ਅਨੁਸਂਧਾਨ ਕੇਨ੍ਦ੍ਰ ਕੇ ਕੇਨ੍ਦ੍ਰੀਧ ਨਿਦੇਸ਼ਕ ਅਨੁਸਂਧਾਨ ਡਾਂ. ਏ.ਚ.ਏ.ਲ.ਡੇਸ਼ਵਾਲ ਸਮੇਤ ਸਾਭੀ ਡੀਨ, ਡਾਵਰੈਂਕਟਰ, ਕ੃ਧਿ ਵੈਜ਼ਾਨਿਕ ਸਮੇਤ ਪ੍ਰਸ਼ਿਕਾਣ ਲੇ ਰਹੇ ਕਿਸਾਨ ਤਪਸ਼ਿਤ ਰਹੇ।

बुधवार, 29 जनवरी 2025

सूरतगढ़, जिला श्रीगंगानगर

श्रीगंगानगर

किसान अपने खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएँ : डॉ जगदीश राणे

» एसकेआरएयू में “सुनियोजित कृषि तकनीके” विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन कार्यक्रम आयोजित » ड्रोन आधारित कृषि को लेकर कृषि विश्वविद्यालय में जल्द शुरू होगी ट्रेनिंग

सीमान्त रक्षक न्यूज

बीकानेर, 28 जनवरी। किसान अपने खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएँ तभी हम अच्छी खेती कर पाएंगे। ये कहना है केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान बीकानेर के निदेशक डॉ. जगदीश राणे का जो स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में “सुनियोजित कृषि तकनीके” विषय पर आयोजित सात दिवसीय कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में किसानों को संबोधित कर रहे थे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने कहा कि आज हमारी आवश्यकता बड़ी मात्रा में फसल उत्पादन की बजाय गुणवत्तापूर्ण फसल उत्पादन की है। साथ ही कहा

तकनीक के बटिकल टावर का उद्घाटन किया। साथ ही प्रशिक्षण पूरा करने वाले किसानों को अतिथियों ने सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। मानव संसाधन विकास निदेशालय कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित समापन समारोह को संबोधित करते हुए डॉ. राणे ने कहा कि पानी हो या उर्वरक, फसल को उतना ही देना चाहिए जितनी जरूरत हो। उन्होंने कहा कि भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए किसान को घर बैठे पता चल जाएगा कि खेत में किस जगह पर पानी या उर्वरक देने की आवश्यकता है। कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने कहा कि आज हमारी आवश्यकता बड़ी मात्रा में फसल उत्पादन की बजाय गुणवत्तापूर्ण फसल उत्पादन की है। साथ ही कहा



कि खेती की परंपरागत तकनीक की बजाय अगर हम कृषि की नई तकनीक का इस्तेमाल करेंगे तभी हम समृद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि हमारा किसान अपने पड़ोस के किसान से ही ज्यादा सीखता है। लिहाजा यहां से प्रशिक्षण लेने वाले किसान अपने खेत में इन तकनीक का इस्तेमाल जरूर करें ताकि पड़ोस का किसान भी इसे सीख सके। अनुसंधान निदेशक डॉ.

विजय प्रकाश ने कहा कि हमें कृषि को लेकर प्रधानमंत्री के ध्येय बाब्य 'मोर क्रॉप, पर ड्रॉप' को ध्यान में रखते हुए परंपरागत खेती को छोड़कर कृषि की नई तकनीक को अपनाना है ताकि कम लागत में अधिक इनकम प्राप्त कर सकें। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय जल्द ही ड्रोन आधारित कृषि को लेकर ट्रेनिंग आयोजित करने जा रहा

है। जिसमें ट्रेनिंग लेने वाले किसान ड्रोन के मास्टर ट्रेनर बन सकेंगे। बीसी से जुड़े एन.सी.पी.ए.च.नई दिल्ली के सयुक्त निदेशक के कौशल ने कहा कि सात दिवसीय ट्रेनिंग में जो भी सीखा है उसे चाहे छोटे स्तर से ही सही, लेकिन फील्ड में जाकर उसका इंप्लीमेंट करें। इससे पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक इंजीनियर जे.के. गौड़ ने बताया कि कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के सुनियोजित खेती विकास केंद्र द्वारा आयोजित और राष्ट्रीय सुनियोजित कृषि और बागवानी समिति द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण में कृषि की विभिन्न नई तकनीक की जानकारी किसानों को समेत सभी ढीन, डायरेक्टर, कृषि वैज्ञानिक समेत प्रशिक्षण ले रहे किसान उपस्थित रहे।

कृषि की नई तकनीक अपनाएं तभी किसान समृद्ध होंगे : डॉ. देवाराम सैनी

एसकेआरएयू में सुनियोजित कृषि तकनीकें विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन कार्यक्रम आयोजित

बीकानेर, (निसं)। किसान अपने खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएं तभी हम अच्छी खेती कर पाएंगे। ये कहना है केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान बीकानेर के निदेशक डॉ. जगदीश राणे का जो स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में सुनियोजित कृषि तकनीकें विषय पर आयोजित सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में किसानों को संबोधित कर रहे थे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने की। कार्यक्रम में अतिथियों ने हाइड्रोपोनिक तकनीक के वर्टिकल टावर का उद्घाटन किया। साथ ही प्रशिक्षण पूरा करने वाले किसानों को अतिथियों ने सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. देवा राम



सैनी ने कहा कि आज हमारी आवश्यकता बड़ी मात्रा में फसल उत्पादन की बजाय गुणवत्तापूर्ण फसल उत्पादन की है। साथ ही कहा कि खेती की परंपरागत तकनीक की बजाय अगर हम कृषि

की नई तकनीक का इस्तेमाल करेंगे तभी हम समृद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि हमारा किसान अपने पड़ोस के किसान से ही ज्यादा सीखता है। लिहाजा यहां से प्रशिक्षण लेने वाले किसान अपने खेत में इन तकनीक का इस्तेमाल जरूर करें ताकि पड़ोस का किसान भी इसे सीख सके।

अनुसंधान निदेशक डॉ. विजय प्रकाश ने कहा कि हमें कृषि को लेकर प्रधानमंत्री जी के ध्येय वाक्य मोर क्रॉप, पर ड्रॉप को ध्यान में रखते हुए परंपरागत खेती को छोड़कर कृषि की नई तकनीक को अपनाना है। इससे पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक इंजीनियर जे.के. गौड़ ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 किसानों ने हिस्सा लिया। किसानों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में हाइड्रोपोनिक जैसी खेती की नई तकनीक के बारे में भी बताया गया।

किसान अपने खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएं - डॉ जगदीश राणे, निदेशक, केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

एसकेआरएयू में "सुनियोजित कृषि तकनीके" विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन कार्यक्रम आयोजित

ड्रोन आधारित कृषि को लेकर कृषि विश्वविद्यालय में जल्द शुरू होगी ट्रेनिंग

हिंदुस्तान से रुबरु

बीकानेर(सुरेश जैन) किसान अपने खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएं तभी हम अच्छी खेती कर पाएंगे। ये कहना है केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान बीकानेर के निदेशक डॉ. जगदीश राणे का जो स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में "सुनियोजित कृषि तकनीके" विषय पर आयोजित सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में किसानों



को संबोधित कर रहे थे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने की। कार्यक्रम में अतिथियों ने हाइड्रोपोनिक तकनीक के वर्टिकल टावर का उद्घाटन किया। साथ ही प्रशिक्षण पूरा करने वाले किसानों को अतिथियों ने सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। मानव संसाधन विकास निदेशालय कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित

समापन समारोह को संबोधित करते हुए डॉ. राणे ने कहा कि पानी हो या उर्वरक, फसल को उतना ही देना चाहिए जितनी जरूरत हो। उन्होंने कहा कि भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए किसान को घर बैठे पता चल जाएगा कि खेत में किस जगह पर पानी या उर्वरक देने की आवश्यकता है। कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने कहा कि आज हमारी आवश्यकता

बड़ी मात्रा में फसल उत्पादन की बजाय गुणवत्तापूर्ण फसल उत्पादन की है। साथ ही कहा कि खेती की परंपरागत तकनीक की बजाय अगर हम कृषि की नई तकनीक का इस्तेमाल करेंगे तभी हम समृद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि हमारा किसान अपने पड़ोस के किसान से ही ज्यादा सीखता है। लिहाजा यहाँ से प्रशिक्षण लेने वाले किसान अपने खेत में इन तकनीक का इस्तेमाल जरूर करें ताकि पड़ोस का किसान भी इसे सीख सके। अनुसंधान निदेशक डॉ. विजय प्रकाश ने कहा कि हमें कृषि को लेकर प्रधानमंत्री जी के ध्येय वाक्य "मार कॉप, पर ड्रॉप" को ध्यान में रखते हुए परंपरागत खेती को छोड़कर कृषि की नई तकनीक को अपनाना है ताकि कम लागत में अधिक इनकम प्राप्त कर सकें। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय जल्द ही ड्रोन आधारित कृषि को लेकर ट्रेनिंग आयोजित करने जा रहा है। जिसमें ट्रेनिंग लेने वाले किसान ड्रोन के मास्टर ट्रेनर बन सकेंगे। वीरी से जुड़े एन.सी.पी.ए.एच.नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक श्री के.के.कौशल ने कहा कि सात दिवसीय ट्रेनिंग में जो भी सीखा है उसे चाहे छोटे स्तर से ही सही, लेकिन फ़ील्ड में

जाकर उसका इंप्लीमेंट करें। इससे पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक इंजीनियर जे.के. गौड़ ने बताया कि कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के सुनियोजित खेती विकास केंद्र द्वारा आयोजित और राष्ट्रीय सुनियोजित कृषि और बागवानी समिति द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण में कृषि की विभिन्न नई तकनीक की जानकारी किसानों को विस्तृत रूप से दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 किसानों ने हिस्सा लिया। किसानों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में हाइड्रोपोनिक जैसी खेती की नई तकनीक के बारे में भी बताया गया। साथ ही सुझाव दिया कि अगर खेती के साथ साथ नरसीरी लगाने की ट्रेनिंग भी मिले तो किसानों को इसका लाभ मिलेगा। कार्यक्रम के आखिर में डॉ. जे.के.तिवाड़ी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पी.के.यादव, कृषि अनुसंधान केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ. एच.एल.देशवाल समेत सभी डीन, डायरेक्टर, कृषि वैज्ञानिक समेत प्रशिक्षण ले रहे किसान उपस्थित रहे।

किसान अपने खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएँ : निदेशक राणे

» एसकेआरएयू में ‘सुनियोजित कृषि तकनीक’ विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन कार्यक्रम आयोजित

सीमा किरण

बीकानेर। किसान अपने खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएं तभी हम अच्छी खेती कर पाएंगे। ये कहना है केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान बीकानेर के निदेशक डॉ. जगदीश राणे का जो स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में ‘सुनियोजित कृषि तकनीक’ विषय पर आयोजित सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में किसानों को संबोधित कर रहे थे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने की। कार्यक्रम में अतिथियों ने हाइड्रोपोनिक तकनीक के वर्टिकल टावर का उद्घाटन किया। साथ ही प्रशिक्षण पूरा करने वाले किसानों को अतिथियों ने सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया।

मानव संसाधन विकास निदेशालय कॉफ्रेंस हॉल में आयोजित समापन समारोह को संबोधित करते हुए डॉ. राणे ने कहा कि पानी हो या उर्वरक, फसल को उतना ही देना चाहिए जितनी जरूरत हो। उन्होंने कहा कि भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए किसान को घर बैठे पता चल जाएगा कि खेत में किस जगह पर पानी या उर्वरक देने की आवश्यकता है।

कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने कहा कि आज हमारी आवश्यकता बड़ी मात्रा में फसल उत्पादन की बजाय गुणवत्तापूर्ण फसल उत्पादन की है। साथ ही कहा कि खेती की



परंपरागत तकनीक की बजाय अगर हम कृषि की नई तकनीक का इस्तेमाल करेंगे तभी हम समृद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि हमारा किसान अपने पड़ोस के किसान से ही ज्यादा सीखता है। लिहाजा यहां से प्रशिक्षण लेने वाले किसान अपने खेत में इन तकनीक का इस्तेमाल जरूर करें ताकि पड़ोस का किसान भी इसे सीख सके।

अनुसंधान निदेशक डॉ. विजय प्रकाश ने कहा कि हमें कृषि को लेकर प्रधानमंत्री जी के ध्येय वाक्य ‘मोर क्रॉप, पर ड्रॉप’ को ध्यान में रखते हुए परंपरागत खेती को छोड़कर कृषि की नई तकनीक को अपनाना है ताकि कम लागत में अधिक इनकम प्राप्त कर सकें। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय जल्द ही ड्रेन आधारित कृषि को लेकर ट्रेनिंग आयोजित करने जा रहा है। जिसमें ट्रेनिंग लेने वाले किसान ड्रेन के मास्टर ट्रेनर बन सकेंगे।

बीसी से जुड़े एन.सी.पी.ए.एच.नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक श्री के.के. कौशल ने कहा कि सात दिवसीय ट्रेनिंग में जो भी सीखा है उसे चाहे छोटे स्तर से ही सही, लेकिन फील्ड में जाकर उसका इंप्लीमेंट करें। इससे पूर्व

प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक इंजीनियर जे.के. गौड़ ने बताया कि कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के सुनियोजित खेती विकास केंद्र द्वारा आयोजित और राष्ट्रीय सुनियोजित कृषि और बागवानी समिति द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण में कृषि की विभिन्न नई तकनीक की जानकारी किसानों को विस्तृत रूप से दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 किसानों ने हिस्सा लिया।

किसानों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में हाइड्रोपोनिक जैसी खेती की नई तकनीक के बारे में भी बताया गया। साथ ही सुझाव दिया कि अगर खेती के साथ साथ नर्सरी लगाने की ट्रेनिंग भी मिले तो किसानों को इसका लाभ मिलेगा।

कार्यक्रम के आखिर में डॉ. जे.के.तिवाड़ी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पी.के.यादव, कृषि अनुसंधान केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ. एच.एल.देशवाल समेत सभी डीन, डायरेक्टर, कृषि वैज्ञानिक समेत प्रशिक्षण ले रहे किसान उपस्थित रहे।

एसकेआरएयू में 'सुनियोजित कृषि तकनीके' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही नई तकनीक अपनाएं - डॉ राणे

बीकानेर, 28 जनवरी। किसान अपने खेत की सॉयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएं तभी हम अच्छी खेती कर पाएंगे। ये कहना है केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान बीकानेर के निदेशक डॉ. जगदीश राणे का जो स्वामी के शवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में



'सुनियोजित कृषि तकनीके' विषय पर आयोजित सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में किसानों को संबोधित कर रहे थे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने की। कार्यक्रम में अतिथियों ने

हाइड्रोपोनिक तकनीक के वर्टिकल यावर का ड्राइटन किया। साथ ही प्रशिक्षण पूरा करने वाले किसानों को अतिथियों ने सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया।

मानव संसाधन विकास निदेशालय कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित समापन समारोह को

संबोधित करते हुए डॉ. राणे ने कहा कि गानी हो या उर्वरक, फसल को उतना ही देना चाहिए जितनी जरूरत हो। उन्होंने कहा कि भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए किसान को घर बैठे पता चल जाएगा कि खेत में किस जगह पर पानी या उर्वरक देने की आवश्यकता है।

कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने कहा कि आज हमारी आवश्यकता बड़ी मात्रा में फसल उत्पादन की बजाय गुणवत्तापूर्ण फसल उत्पादन की है। साथ ही कहा कि खेती की परंपरागत तकनीक की बजाय अगर हम कृषि की नई तकनीक का इस्तेमाल करेंगे तभी हम समृद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि हमारा किसान अपने पढ़ोस के किसान से ही ज्यादा सीखता है। लिहाजा यहां से

प्रशिक्षण लेने वाले किसान अपने खेत में इन तकनीक का इस्तेमाल जरूर करें ताकि पढ़ोस का किसान भी इसे सीख सके। अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के सुनियोजित खेती विकास केंद्र द्वारा आयोजित और राष्ट्रीय सुनियोजित कृषि और बागवानी समिति द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण में कृषि की

विभिन्न नई तकनीक की जानकारी किसानों को विस्तृत रूप से दी गई है ताकि कम लागत में अधिक इनकम प्राप्त कर सकें। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय जल्द ही ड्रोन आधारित कृषि को लेकर ट्रेनिंग आयोजित करने जा रहा है। जिसमें ट्रेनिंग लेने वाले किसान ड्रोन के मास्टर ट्रेनर बन सकेंगे। वीसी से जुड़े एन.सी.पी.ए.च. नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक के, कौशल ने कहा कि सात दिवसीय ट्रेनिंग में जो भी सीखा है उसे चाहे छोटे स्तर से ही सही, लेकिन फील्ड में जाकर उसका इंप्लीमेंट करें। इससे पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक इंजीनियर जे.के. गौड़ ने बताया कि कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के सुनियोजित खेती विकास केंद्र द्वारा आयोजित और राष्ट्रीय सुनियोजित कृषि और बागवानी समिति द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण में कृषि की

विभिन्न नई तकनीक की जानकारी किसानों को विस्तृत रूप से दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 किसानों ने हिस्सा लिया। किसानों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में हाइड्रोपोनिक जैसी खेती की नई तकनीक के बारे में भी बताया गया। साथ ही सुझाव दिया कि अगर खेती के साथ साथ नर्सरी लगाने की ट्रेनिंग भी मिले तो किसानों को इसका लाभ मिलेगा। कार्यक्रम के आखिर में डॉ. जे.के.तिवाड़ी ने धन्यवाद जापित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पी.के.यादव, कृषि अनुसंधान केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ. एच.एल.देशवाल समेत सभी डीन, डायरेक्टर, कृषि वैज्ञानिक समेत प्रशिक्षण ले रहे किसान उपस्थित रहे।

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

बीकानेर @ पत्रिका. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में सुनियोजित कृषि तकनीकें विषय पर सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान के निदेशक डॉ. जगदीश राणे ने कहा कि किसान अपने खेत की सौंयल हेल्थ जानने के बाद ही कृषि की नई तकनीक अपनाएं तभी हम अच्छी खेती कर पाएंगे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. देवा राम सैनी ने की। कार्यक्रम में अतिथियों ने हाइड्रोपोनिक तकनीक के वर्टिकल टावर का उद्घाटन किया। साथ ही प्रशिक्षण पूरा करने वाले किसानों को अतिथियों ने सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। इस दौरान कुलसचिव डॉ. सैनी ने कहा कि आज हमारी आवश्यकता बड़ी मात्रा में फसल उत्पादन की बजाय गुणवत्तापूर्ण फसल उत्पादन की है। खेती की परंपरागत तकनीक की बजाय अगर हम कृषि की नई तकनीक का इस्तेमाल करेंगे तभी हम समृद्ध होंगे।